ल्यू फ़ूताओ

(१९४० -   )

ल्यू फ़ूताओ का जन्म हूपेइ प्रांत की हानयाङ काउंटी में १९४० में हुआ था। १९५९ में उच्च माध्यमिक विद्यालय की पढ़ाई पूरी करने के बाद उन्होंने प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालयों में अध्यापन का कार्य किया। १९६२ में वह सेना में शामिल हुए। कुछ वर्ष तक सेना के एक अखबार के लिए रिपोर्टिंग करने के पश्चात १९७१ से उन्होंने सांस्कृतिक कार्य आरंभ किया। १९७९ में ल्यू पूर्णकालिक लेखक बने और उसी वर्ष उन्होंने चीन लेखक संघ की सदस्यता ली।

१९७२ से अब तक उनकी दस से अधिक कहानियां और गद्य रचनाएं प्रकाशित हो चुकी हैं, जिनमें "संकट की घड़ी" और "नीला ताप्ये पहाड़" उल्लेखनीय हैं। १९७८ में प्रकाशित उनकी कहानी "चश्मे" को सर्वश्रेष्ठ कहानी का राष्ट्रीय पुरस्कार मिला था।

दक्षिण झील का चांद

ल्यू फूताओ

१

कुछ वर्षों पहले तक दक्षिण झील के वक्राकार किनारे के पास की जमीन पर केवल एक ऊहान तृतीय दवा कारखाना राज्य संचालित कारखाना था। पर पिछले कुछ वर्षों में प्रदूषण के खिलाफ शहरी इलाके के नागरिकों के शोर मचाने के कारण शहर के एक के बाद दूसरे रासायनिक कारखाने यहां आते चले गए। यह अब शहर का रासायनिक उद्योग केन्द्र बन गया है।

आइए, आपको इन कारखानों का परिचय दूं। घुमावदार पक्की सड़क के पूर्व में इन कारखानों के साइनबोर्ड एक पंक्ति में लगे हैं; मध्य-दक्षिण रासायनिक कारखाना, लाल झंडा रासायनिक कारखाना, चिंगारी रासायनिक कारखाना, आदि। उनके नाम निश्चय ही शानदार थे। पर सचमुच में ये सब "छोटे कारोबार" थे, जिनमें सौ के लगभग मजदूर काम करते थे। कुछ लोग इन्हें नीची नजरों से देखते थे और कारखाना कहना पसंद नहीं करते थे। इन्हें वे इस नाम के योग्य नहीं समझते थे। पर वे तेजी से बढ़े और उनमें से कुछ कारखानों के उत्पाद की बराबरी करने वाला उत्पाद मध्य-दक्षिण चीन में नहीं था।

चिंगारी रासायनिक कारखाने का उदाहरण लें। यह देखने में उजाड़ लगता था और कोई भी इसके बारे में अच्छा अनुमान नहीं लगा सकता था। पर इसके कई मशहूर उत्पाद थे, जैसे चिरनूतन लेप, फेरिक क्लोराइड, फेरस क्लोराइड, और यहां तक कि सोया सॉस की बोतल का छोटा रबड़ का ढक्कन। इन सबका सालाना उत्पादन-मूल्य १० लाख य्वान से भी अधिक था। यहां का फेरिक क्लोराइड पूरे ऊहान शहर में जलशुद्धिकारक के रूप में अपरिहार्य था। इस छोटे कारोबार का पूरा नाम "सिंह गली का चिंगारी रासायनिक कारखाना, ऊछाङ नागर क्षेत्र, ऊहान शहर" था, पर इसकी मुहर में जानबूझकर "सिंह गली" को नहीं रखा गया था। वरिष्ठ अधिकारियों से इसकी अनुमति लेने के लिए कारखाने की पार्टी सचिव वान को इसका कारण समझाना पड़ा था। उन्होंने कहा, "हमारे कारखाने के युवा मजदूर चिंतित रहते हैं कि 'छोटे कारोबार' का नाम सुनकर उनकी कन्या-मित्र मुंह फेर लेंगी। इसके अलावा ये दो शब्द व्यापार में कोई सहायता भी नहीं करते। यदि लोगों ने 'छोटे कारोबार' का नाम लेबल पर देखा तो वे उत्पाद पर भी विशेष ध्यान नहीं देंगे।" हालांकि ये बातें

असंगत प्रतीत हुईं, पर पार्टी सचिव वान की व्याख्या वाजिब और तार्किक लगी। युवा मजदूरों के प्रेम की गंभीर समस्या और विशेषकर कारखाने के भविष्य को ध्यान में रखकर वरिष्ठ अधिकारियों ने मौन सहमति दे दी। पर मुहर में आए बदलाव से कारखाने की प्रतिष्ठा में कुछ खास सहायता न मिली। इसके बाद भी कारखाने को कोई सामग्री खरीदनी होती तो उन्हें अपनी जरूरत जोर देकर बतानी पड़ती, मानो कोई पक्षपात करा रहे हों। दूसरी तरफ इस छोटे कारोबार का उत्पादन अच्छा होने के बावजूद न तो घरेलू उपयोग का था और न खेलने के काम आ सकता था। यहां के उत्पादों के नाम सुनकर लोगों के कान खड़े हो जाते थे। ये क्या उत्पाद हैं? कोई जहरीली दवा हैं शायद? इस तरह, उत्पादन बढ़ाने में भी किसी की मदद नहीं मिलती थी।

तो यह स्थिति थी। पचास वर्षीया पार्टी सचिव वान के सामने एक नई समस्या आ खड़ी हुई थी। कारखाने के मुख्य उत्पादन फेरिक क्लोराइड को द्रव के बजाए अब ठोस रूप में उत्पादित करना था। इस काम के लिए एक तीन मंजिली इमारत बना ली गई और आवश्यक मशीनें लगा दी गईं। पर कारखाना एक ब्वायलर जुटाने में असफल रहा। सचिव वान के शब्दों में "पानी सिर के ऊपर से गुजरने वाला है।" यह सचमुच अत्यंत नाजुक घड़ी थी!

पार्टी सचिव के बारे में क्या बताऊं? वह पार्टी सचिव तो थीं ही, पर वह एक गृहिणी भी थीं। काम करने का उनका तरीका किसी प्रतिष्ठापित सिद्धांत के कठघरे में नहीं आता था, पर उनका कहा सभी मानते थे। कारखाने को किसी चीज की जरूरत होती तो वह दो फीट लंबी इस्पात की पटरी बजातीं और सभी मजदूरों को बुलाती थीं। मजदूरों के सामने कारखाने की समस्या रखकर उनसे सलाह मांगती थीं। मजदूर घर लौटकर अपने परिवार में सलाह करते थे। जरूरत पड़ने पर वे अपने दोस्तों और संबंधियों से मिलते थे या दूसरी इकाइयों और बड़े कारखानों में काम करने वाले अपने परिचितों से भी राय लेते थे। मौखिक वादा हो जाने के बाद कारखाने की मोहर लगा कर औपचारिक पत्र भेजा जाता था। आमतौर पर कारखाने की जरूरत की सामग्री को यथाशीघ्र उपलब्ध करने के लिए पार्टी सचिव वान स्वयं अनेक लोगों से मिलती थीं। पर इस बार सारी कोशिशों के बावजूद ब्वायलर नहीं मिल पा रहा था। आखिरकार कुछ मजदूर एक महत्वपूर्ण सूचना ले आए कि च्याङनान न्यू वाटरवर्क्स ने एक नया बड़ा ब्वायलर खरीदा है। उनका पुराना छोटा ब्वायलर उनकी कॉलोनी में रखा है। तुरंत एक संदेशवाहक को ब्वायलर के बारे में पता लगाने के लिए भेजा गया, पर वाटरवर्क्स ने उसे बेचने से मना कर दिया। उन्होंने जवाब में केवल यह कहा कि पुराने ब्वायलर की उन्हें स्वयं जरूरत है। कुछ ही दिनों के बाद "छोटे कारोबार" के मजदूरों को जानकारी मिली कि यदि वाटरवर्क्स के आपूर्ति विभाग के प्रभारी सहप्रबंधक य्वान राजी हो जाएं तो बिना परिचय पत्र के भी ब्वायलर मिल सकता है। सोच-विचार कर यही फैसला लिया गया कि कोई सहप्रबंधक य्वान से मिलने जाए। पर उन तक पहुंचना आसान काम नहीं था, इसलिए कोई भी इस कार्य के लिए तैयार नहीं हुआ।

टन... टन... टन...पार्टी सचिव वान ने फिर से घंटी बजायी। उन्होंने पूछा कि कोई इस

काम के लिए तैयार है? पर मजदूरों के बीच शांति बनी रही। वे खामोशी से पार्टी सचिव वान को देख रहे थे।

"ऐसे एकटक मुझे देखने से क्या होगा? आखिर हम क्या करें?"

"मैं कोशिश करता हूं।" अचानक किसी ने दबी आवाज में कहा। सामान्य स्थिति में इस व्यक्ति पर कोई ध्यान भी नहीं देता। पर इस नाजुक घड़ी में जब पार्टी सचिव वान और मजदूर किसी अकालग्रस्त इलाके में अनाज के लिए प्रतीक्षारत नागरिकों जैसे थे, कार्य की जिम्मेदारी लेने वाला कोई भी आदमी उनके लिए उद्धारक के समान था। पर उन्होंने जब उस व्यक्ति को देखा तो मजदूरों को ही नहीं पार्टी सचिव को भी संदेह हुआ और उनका दिल बैठ गया।

उस व्यक्ति का नाम खो थिङ था। वह एक नौजवान था। सभी की नजरें उस पर टिकी थीं, उसका गोरा चेहरा अचानक लाल हो गया। वह १८५ सेंटीमीटर लंबा और देखने में आकर्षक था।

"ठीक है, तुम कोशिश कर सकते हो और चाहे जैसे भी... जैसे भी हो... तुम्हें ब्वायलर ले आना है।" पार्टी सचिव ने अधमुंदी आंखों से उसे देखते हुए कहा। वह इसके बारे में रत्ती भर भी आश्वस्त नहीं थीं। वह तो यह भी कहना चाह रही थीं, "जब कोई जाने को तैयार नहीं है तो तुम जाओ, पर मुझे तुमसे किसी चमत्कार की उम्मीद नहीं है...।" पर उन्होंने आखिरी समय में उसे उत्साहित करने के विचार से जाने को कह ही दिया।

हालांकि खो थिङ किसी तकनीशियन के पद पर नहीं था, पर उसमें तकनीशियन का काम करने की योग्यता थी और अपने काम की दक्षता के लिए पूरे काखाने में मशहूर था। भविष्य में खुलने वाली ठोस फेरिक क्लोराइड कार्यशाला बड़ी और आधुनिक थी। कार्यशाला और इसका साज-सामान बिठाने की रूपरेखा और सारी तकनीकी प्रक्रिया इसी युवक ने तैयार की थी, हालांकि वह कभी किसी तकनीकी कॉलेज में नहीं पढ़ा था। दरअसल उसने चीन के शहरी युवकों का ही रास्ता अपनाया था, उच्च माध्यमिक विद्यालय की पढ़ाई पूरी करने के बाद उसे दो साल के लिए देहात में खेतीबाड़ी के लिए भेज दिया गया था और वहां से लौटने पर उसने एक "छोटे कारोबार" में नौकरी कर ली थी। आज के शिक्षित युवकों का यही एक रास्ता था; उसके सामने भी दूसरा कोई चारा न था। पर आने के कुछ ही समय बाद वह कारखाने की अनेक तकनीकी समस्याओं को सुलझाने में दक्ष हो गया। जब भी कोई नयी तकनीक अपनानी होती थी, लोग उसी पर भरोसा करते थे। नियमतः वह नए उपकरण के निर्देशों का सावधानी से अध्ययन करता था और धीरे-धीरे उन पर प्रयोग कर दक्षता हासिल कर लेता था। उसने अपने साथी मजदूरों का सिर कभी नीचे नहीं होने दिया। सभी नए मजदूर उसकी इज्जत करते थे और पुराने मजदूर भी मानते थे कि वह असाधारण व्यक्ति है। फिर भी अफसोस की बात यह थी कि ईमानदार होने के साथ-साथ वह बहुत अधिक शर्मीला था। उसके दिमाग में बहुत-सी बातें थीं, पर बोलने के मौके पर शब्द धोखा दे जाते थे। शायद इसी कारण उस शर्मीले युवक द्वारा काम स्वीकार करने पर पुराने मजदूरों को आश्चर्य हुआ, उसने इसके पहले कभी इस तरह के काम की जिम्मेदारी नहीं ली थी और आज वह सहप्रबंधक य्वान से मिलने जाने और ब्वायलर लाने की कोशिश करने के लिए आगे आया था!

वास्तव में खो थिङ को भी अपने ऊपर संदेह था कि उसे सफलता मिलेगी ही।

२

आइए, अब एक दूसरी बात करें। ऊछाङ के बाजार की भीड़ में कभी-कभी दो समान लंबाई की लड़कियां दिखाई पड़ती थीं। उन दोनों की लंबाई लगभग १७२ सेंटीमीटर थी। उनके बाल समान ढंग से कटे थे और वे एक जैसे कपड़े भी पहनती थीं। गली में चाहे जितनी भीड़ हो, फुटपाथ पर चाहे जितने आदमी चल रहे हों, वे दोनों हमेशा हाथ में हाथ डाले एक साथ घूमती फिरती थीं। चूंकि दोनों लंबी और संतुलित आकृति की थीं, इसलिए उनकी तरफ लोगों का ध्यान स्वयं ही चला जाता था। यहां तक कि उच्छृंखल लड़के भी उन्हें रास्ता दे देते थे और उन्हें जाता देखकर उनकी प्रशंसा करते थे। गोल चेहरे वाली लड़की का नाम ली लू था और अंडाकार चेहरे वाली का य्वान श्या था। वे दोनों एक ही स्कूल में पढ़ी थीं, पर अलग-अलग कक्षा में थीं। पर समान कद-काठी, समान अभिरुचि और इच्छाओं के कारण दोनों में दोस्ती हो गई थी। वे दोनों इतनी गहरी सखियां थीं कि जब भी मिलतीं बातें खत्म ही नहीं हो पातीं। वे एक-दूसरे के प्रेम संबंधों में भी सलाह देतीं। उनकी प्राथमिक शर्त भी समान थी : युवक १८५ सेंटीमीटर से कम लंबा नहीं होना चाहिए। भगवान भला करे! यह एक बड़ी शर्त थी। पारिवारिक पृष्ठभूमि, नौकरी और मासिक वेतन जैसी दूसरी शर्तों को छोड़ भी दें तो उनकी पहली शर्त के अनुसार ही १८५ सेंटीमीटर लंबा और वह भी उनकी उम्र का तथा इसी शहर का युवक पाना एक मुश्किल काम था, जबकि देश के युवकों की औसत लंबाई इतनी नहीं थी। उनमें सहमति थी कि इस मामले में वे केवल एक-दूसरे की सलाह मानेंगी, दूसरों की सलाह और माता-पिता के आदेशों या किसी मध्यस्थ की सिफारिश पर ध्यान नहीं देंगी। उदाहरण के लिए, यदि कोई ली लू को किसी युवक से मिलवाता तो य्वान श्या उसे अच्छी तरह जांचती थी। यदि उसकी नाक फड़की और उसने कहा, "ओह, कितना नाटा है!" तो यह सुनकर ली लू के भाव अचानक बदल जाते थे और बेचारे युवक की कोशिशों का वह अंत होता था।

मैंने अभी-अभी बताया कि दो सखियां भीड़ भरे बाजार में अक्सर एक साथ घूमती थीं। यह छै महीने पहले की बात थी। और अब य्वान श्या की स्वीकृति से ली लू को एक दोस्त मिल गया था। उनकी छुट्टी के दिन शुक्रवार को अब ली लू और य्वान श्या पहले की तरह साथ नहीं रहती थीं। यह सच है कि ली लू अपने दोस्त के साथ य्वान श्या से मिलने आती थी पर य्वान श्या ने महसूस किया कि वे उसका दिल रखने के लिए ऐसा करते हैं ताकि वह उपेक्षित महसूस न करे। वह जब भी उन दोनों को साथ-साथ जाते देखती वह मंत्रमुग्ध होकर उनके ओझल होने तक उन्हें देखती रहती थी।

य्वान श्या की मां ने उसे बार-बार सलाह दी कि अपनी शर्त पर इस तरह अडिग न रहे। क्यों नहीं अपने बराबर लंबाई के या देखने में कुछ छोटे युवक पर विचार करती हो? पर मां की सलाह का हमेशा य्वान श्या और ली लू ने दृढ़ता से विरोध किया। एक बार य्वान श्या

की मां ने कहा, "अपने पिता को देखो। वह लंबाई में मुझसे छोटे हैं, पर इससे क्या फर्क पड़ता है।" य्वान श्या ने अपनी मां को घूरकर देखा और कहा, "तुम चाहती हो कि सभी तुम्हारे जैसे हो जाएं।" फिर उसने संक्षेप में बताया कि वह कैसा पति चाहती है, लंबा और ईमानदार। उसने अपने घर में अपनी शर्त बताई और कहा कि इससे कम पर वह नहीं मानेगी। उसके पिता अपना गुस्सा न रोक सके और बोले, "क्यों, तुम्हें नहीं लगता कि राजनीतिक मानदण्ड पहले रखना चाहिए?" य्वान श्या ने हठ के साथ कहा, "ठीक है तो ईमानदार और लंबा। और कोई आपत्ति?"

य्वान श्या राज्य संचालित तृतीय दवा कारखाने में काम करती थी और रोज साइकिल से कारखाने आती-जाती थी। वसंत में एक दिन उसकी इच्छा ली लू से मिलकर बातें करने की हुई। दक्षिण झील के किनारे-किनारे सड़क बनी थी। शाम के सूरज की तिरछी किरणें झील की लहरों को चमका रही थीं और हरे पहाड़ों की छवि झील में उभर रही थी। य्वान श्या साइलिक चलाती हुई आराम से चारों तरफ देखती जा रही थी, कई नाटे युवकों से आगे निकलकर उसे एक प्रकार का आत्मसंतोष हो रहा था। अचानक "अमरपक्षी-१२" पर सवार एक युवक उसकी बगल से निकला। उसे बड़ा आश्चर्य हुआ। उसने भी अपनी साइकिल तेज की और थोड़ी ही देर में उससे आगे निकल गई। आगे जाकर उसने पलटकर उस युवक को देखा, वह युवक भी ली लू के दोस्त के समान ही लंबा था। यह अत्यंत रोचक बात थी। थोड़ी देर के बाद उसने फिर से पलटकर देखा कि कहीं वह युवक उससे आगे निकलने की कोशिश तो नहीं कर रहा है। काम से घर लौटते समय खो थिङ जैसे युवक के लिए यह अपमान की बात थी कि कोई लड़की उससे आगे निकल जाए। वह ईमानदार और अच्छे स्वभाव का युवक था। पर ईमानदार व्यक्ति भी कभी-कभी विचित्र हरकतें करता है। जब उसने महसूस किया कि इस लड़की ने आगे निकलकर उसे चुनौती दी है तो उसने भी अपनी साइकिल तेज की और उससे आगे निकल गया। पर य्वान श्या को उसकी यह हरकत अच्छी नहीं लगी। उसने पेशेवर साइकिल चालक की तरह झुककर पूरी ताकत से तेज पैडल मारे और जल्दी ही खो थिङ से आगे निकल गई। आगे निकलकर अभी उसने सांस भी नहीं ली थी कि खड़ाक की आवाज हुई और पैडल ढीला हो गया। थोड़ी दूर तक चलने के बाद उसकी साइकिल अपने आप रुक गई। वह साइकिल से उतर गई और खो थिङ उससे आगे निकल गया। पीछे आने वाले "नाटे" भी उसकी हंसी उड़ाते हुए उससे आगे निकल गए।

उनकी हंसी सुनकर खो थिङ ने पीछे मुड़कर देखा, वह लड़की किंकर्तव्यविमूढ़-सी खड़ी थी। उसे अफसोस हुआ। वह साइकिल मोड़कर उस लड़की के पास पहुंचा।

"क्या हुआ, मैं देखूं क्या?" यह कहते हुए उसने अपनी जेब से एक छोटा पेचकस निकाला। फिर अपने चाबी के गुच्छे में लगा स्पैनर लेकर य्वान श्या की मंजूरी की भी प्रतीक्षा किए बिना वह "अमरपक्षी-१८" साइकिल की जांच करने लगा।

"साइकिल की चेन टूट गई," उसने कहा।

य्वान श्या ने असहाय नजरों से साइकिल ठीक करते हुए युवक को देखा, वह कुछ कर भी नहीं सकती थी। उसने लंबी सांस छोड़ी, "ओह, क्या मुसीबत हो गई!"

शाम ढलती जा रही थी। झील के किनारे ठंडी हवा चल रही थी। शाम ढलने के साथ झील रंग बदल रही थी। पहले वह हरी से हल्की नीली हुई और फिर उस पर काली परत चढ़ गई। आकाश और झील का रंग एक-सा रहस्यपूर्ण हो गया था। य्वान श्या लंबी होने के बावजूद थी तो लड़की ही। एक अपरिचित युवक के साथ शाम के सन्नाटे में खड़ी, आखिर वह अपनी घबराहट नहीं रोक सकी।

अंधेरे की चादर हटाकर धीरे-धीरे चांद ऊपर आया और चांद से आलोकित आकाश की छाया झील में दिखाई पड़ी। वसंत की सुनसान रात में चांद और सड़क की बत्तियों की रोशनी संयोग से मिले युवक और युवती को बहला रही थी। य्वान श्या अपनी साइकिल के लिए चिंतित थी, पर थोड़ी डरी हुई भी थी। वह युवक की भलमनसाहत से दबी थी और धन्यवाद व्यक्त करने के लिए उचित शब्दों को ढूंढ़ने में लगी थी। अचानक उसने सोचा, "उसे अपने किए की सजा स्वयं भुगतनी चाहिए! अपनी समस्या से वह दूसरों को क्यों परेशान करे? पर यदि वह छोड़कर चला गया तो वह क्या करेगी? वह साइकिल ढकेलती हुई या कंधे पर लादकर घर जाएगी?" वह दुविधा में पड़ी थी। फिर से सोचने पर उसने यही फैसला किया कि वह उस युवक पर भरोसा करने के अलावा और कुछ नहीं कर सकती। वह युवक साइकिल ठीक करने में जी-जान से लगा था। अभी तक तो वह उसके नाम से भी अपरिचित थी।

आखिरकार खो थिङ ने कहा, "देखो, ऐसा करते हैं! यदि तुम्हें मुझ पर विश्वास हो तो तुम मेरी साइकिल से घर चली जाओ, तम्हारे घर वाले परेशान हो रहे होंगे। मैं तुम्हारी साइकिल ठीक कर दूंगा, पर इसमें समय लगेगा। कल हम लोग अपनी साइकिल बदल लेंगे।" उसने सोच लिया था कि लड़की की साइकिल यदि यहां ठीक नहीं हुई तो वह इसे लेकर घर चला जाएगा।

य्वान श्या ने पूरी गंभीरता से कहा, "पर मैं तुम्हें यहां अकेले छोड़कर नहीं जाना चाहती।"

"तुम्हें मुझ पर विश्वास नहीं है। तुम्हें ऐसा लगता है कि मैं अपनी पुरानी साइकिल के बदले तुम्हारी अच्छी व आधुनिक साइकिल लेकर चलता बनूंगा। चिंता न करो। साइकिल पर पीछे नंबर की प्लेट लगी है। तुम थाने में जाकर मेरा नाम व ठिकाना आसानी से पता लगा सकती हो।"

य्वान श्या ने तपाक से कहा, "नहीं, मेरा मतलब यह नहीं था।"

"फिर यहां क्यों रुकोगी? कोई जरूरत नहीं है। कल मैं सबेरे जगूंगा और तुम्हारी साइकिल लेकर तुम्हारे कारखाने के गेट पर आ जाऊंगा। तुम मध्य चीन कृषि कॉलेज की हो या तृतीय दवा कारखाने की?"

य्वान श्या ने बताया कि वह तृतीय दवा कारखाना में काम करती है। पर वह अभी भी नहीं जाना चाह रही थी। घर न जाने का कोई और कारण नहीं था; उसे लगा कि जब तक वह युवक साइकिल ठीक न कर ले, उसे वहीं रहना चाहिए। खो थिङ ने उससे बार-बार घर चले जाने को कहा, अंत में तो उसने यह भी चेतावनी दी कि अगर वह घर नहीं गई तो वह साइकिल ठीक नहीं करेगा। उसे भी महसूस हुआ कि यहां रुकने का कोई मतलब नहीं है।

फिर वह उसकी साइकिल से लौटी। घर लौटते समय उसके दिमाग में अनेक तरह की बातें घूम रही थीं।

अगली सुबह सबेरे हां खो थिङ उसके कारखाने आ गया और गेट के सामने खड़े होकर उसने उस लड़की की प्रतीक्षा की। साइकिल की अदला-बदली सामान्य रही। हाथ मिलाना या कागज पर हस्ताक्षर करना नहीं हुआ। थोड़ी बातचीत के साथ अदला-बदली पूरी हो गई। लड़की ने खुश और चकित होकर पूछा, "तुमने साइकिल ठीक कर दी?" युवक ने जवाब दिया, "हां।" य्वान श्या अपनी कृतज्ञता प्रकट करना चाह रही थी। अभी वह उसका नाम व ठिकाना पूछने ही वाली थी कि युवक मुस्कराया और अपनी साइकिल पर चढ़कर आगे बढ़ा। य्वान श्या ने पीछे से चिल्लाकर कहा, "कभी मेरी सहायता की जरूरत हो तो मुझे न्यू वाटरवर्क्स कॉलोनी मे ढूंढ़ सकते हो।"

ऊपर की प्रेम कहानी सुनकर य्वान श्या की सलाहकार ली लू ने मेज पर मुक्का मारते हुए आश्चर्य प्रकट किया। उसे लगा कि य्वान श्या लापरवाह रही। यदि उसने उसकी साइकिल का नंबर भी लिख लिया होता तो उसे ढूंढ़ निकालना आसान होता और फिर दोनों की मुलाकात करायी जाती।

य्वान श्या ने अपने बचाव में कहा, "यदि मेरी जगह तुम होतीं तो तुम भी यही करतीं। मैं अजीब दुविधा में थी।" यह तो अपने बचाव में उसका जवाब था, पर वह भी अफसोस कर रही थी।

३

सभी व्यावहारिक चीनी दुनिया के विभिन्न तरीकों से अच्छी तरह परिचित हैं। वे जानते हैं कि जिंदा रहने के लिए एक-दूसरे पर निर्भर रहना आवश्यक है। "एक-दूसरे की सहायता" उनके दैनिक जीवन का हिस्सा है। खो थिङ ने य्वान श्या की साइकिल ठीक की, पर साइकिल ठीक करने से पहले उसने यह नहीं सोचा था कि उसे भी उस लड़की की सहायता की जरूरत पड़ सकती है जिससे वह अचानक मिला था। उसकी सहायता करते समय खो थिङ ने दूसरी कोई बात सोची भी नहीं थी। यह तो जब पार्टी सचिव वान ने न्यू वाटरवर्क्स कॉलोनी में पड़े ब्वायलर की बात की तो उसे उस लड़की का ख्याल आया।

कारखाने से लौटने के बाद वह सीधे न्यू वाटरवर्क्स कॉलोनी गया। न्यू वाटरवर्क्स कॉलोनी में तीन-चार मंजिली नई इमारतें और कुछ पुराने मकान थे। जिस लड़की का नाम भी नहीं मालूम था, उसे वह कैसे खोज निकालता? वह यह भी नहीं कह सकता था कि दक्षिण झील के किनारे एक शाम जिस लड़की की साइकिल खराब हो गई थी, वह उसे ढूंढ़ रहा है। खो थिङ की समझ में नहीं आया कि क्या करे? अचानक उसे लगा कि उसने व्यर्थ की यह मुसीबत मोल ली, वह अपने कारखाने के लिए ब्वायलर की व्यवस्था नहीं कर सकता। पर उसने हार नहीं मानी। उसे यह आशा थी कि किसी खिड़की से उस लड़की का अंडाकार

चेहरा दिखाई पड़ जाएगा। आखिर शाम हो गई और वह निराश होकर घर लौट आया।

अगले दिन उसे देखते ही पार्टी सचिव वान ने पूछा, "खो थिङ, तुम ब्वायलर की व्यवस्था करने वाले थे, उसका क्या हुआ?"

"मैंने कोशिश की, पर सफलता नहीं मिली," उसने सीधा-सा जवाब दिया।

"क्या तुम किसी से मिले?" उन्होंने फिंर से पूछा।

"नहीं, मैं किसी से नहीं मिला।"

पार्टी सचिव वान ने अधीर होकर कहा, "जाओ, फिर से कोशिश करो। पिछली बार तुमने किससे पूछा था? शायद मैं तुम्हारी कोई मदद कर सकूं। यदि तुम्हें बात करनी नहीं आती तो मैं सिखा सकती हूं।"

युवक को सच बताने की हिम्मत नहीं हुई। वह इतना ही कह सका, "ठीक है, अपनी पाली समाप्त होने के बाद मैं जाऊंगा और फिर से कोशिश करूंगा।"

"कोशिश" शब्द सुनकर पार्टी सचिव वान और अधीर हो गईं। उन्होंने कहा, "मैं तुमसे पूछ रही हूं, यह मजाक नहीं है। यदि कोई कठिनाई हो या उन्हें कुछ देना हो तो मुझे बताओ। ठीक है, अगली बार एक पैकेट अच्छी सिगरेट लेते जाना।"

"नहीं... रहने दें... वह सिगरेट नहीं पीती!"

पार्टी सचिव कैसे सोच सकती थी कि उसके दिमाग में कोई लड़की है। तो खो थिङ में बदलाव आ गया? वह हंसीं, उन्हें आशा की किरण दिखाई पड़ी।

"तो तुमने मुझ जैसी बूढ़ी औरत से भी यह बात छिपाई। अगर वह तुम पर मोहित हुई तो मैं सहायता करूंगी। ठीक है, तुम प्रेम के साथ-साथ ब्वायलर की भी बात करना। तुम उससे सहायता मांग सकते हो।"

खो थिङ ने गंभीरता से कहा, "पार्टी सचिव वान, आपको मुझसे मजाक नहीं करना चाहिए।"

उन्होंने नाखुश होकर पूछा, "भला क्यों?"

खो थिङ शरमाकर वहां से चला गया। उस दिन उसने चुपचाप काम किया और छुट्टी होने से आधे घंटे पहले दवा कारखाने के गेट पर उसकी तलाश में निकला।

उसके कारखाने के गेट पर थोड़ी देर वह खड़ा रहा। छुट्टी का सायरन बजते ही लापरवाह युवा मजदूरों का एक समूह शोर करता हुआ बस स्टेशन की तरफ भागा। फिर साइकिल सवारों का एक समूह आया और आगे निकल गया। खो थिङ अपने विशेष उद्देश्य के कारण केवल महिला मजदूरों को देख रहा था। उसने अनेक महिला मजदूरों को देखा, पर वह नजर नहीं आई। उसने सोचा शायद काम समाप्त होने के बाद वह कपड़े बदल रही हो। अचानक वह दिखाई पड़ी। उसने आधुनिक तो नहीं पर सुंदर कपड़े पहन रखे थे। अपनी "अमरपक्षी-१८" साइकिल लिए वह अपनी सहेलियों के साथ हंसी-मजाक करती चली आ रही थी। उसके साथ आ रही सभी लड़कियां उससे नाटी थीं। हां, वही थी। लंबी और छरहरी, अंडाकार चेहरे की सुंदर लड़की! जब वह गेट के पास पहुंची तो खो थिङ को पहले थोड़ी झिझक महसूस हुई। साहस बटोरकर वह उसे बुलाने वाला ही था कि वह अपनी साइकिल पर चढ़कर

चलने के लिए तैयार हुई। इस नाजुक मौके पर खो थिङ के साहस ने साथ दिया और उसने आवाज दी, "ओ, कॉमरेड!"

लड़कियों ने अपरिचित युवक को देखा और एक-दूसरे की तरफ देखकर मुस्कराईं। उन्हें नहीं मालूम था कि वह किसे बुला रहा है।

य्वान श्या चौंकी, पर उसने तुरंत पहचान लिया। इसी युवक के बारे में तो वह दिन-रात सोच रही थी और आभार व्यक्त करना चाहती थी। "अरे... तो तुम ही हो?" खुशी और आश्चर्य से उसका चेहरा लाल हो गया।

उसकी सभी सहेलियां अपनी-अपनी साइकिलों से उतर गईं। इस लंबी जोड़ी को देखकर सबने एक ही बात सोची। एक लड़की ने चिढ़ाने के अंदाज में य्वान श्या से पूछा, " 'ओ, कॉमरेड'! क्या अब भी हम तुम्हारा इंतजार करें?"

निश्चित ही य्वान श्या नहीं चाहती थी कि वे रुकी रहें, पर उसने कहा, "जैसी तुम सबों की मर्जी।"

लड़कियों ने ताना मारा, "अरे, सीधी क्यों नहीं कहती कि मुझे अकेली छोड़ दो!" इतना कहकर वे मधुमक्खियों के झुंड की तरह वहां से उड़ गईं।

खो थिङ ने झेंपते हुए कहा, "मैं एक खास वजह से तुमसे मिलने आया हूं।..."

ऐसी परिस्थिति में इन बातों का कोई औचित्य नहीं होता, फिर भी युवक की झेंप देखकर उसने कहा, "उनकी चिंता मत करो, आओ इस रास्ते से चलें।"

वे अपनी साइकिल से विपरीत दिशा में निकले। वे आपस में बातें करते जा रहे थे।

"मैं तुम्हें खोजने न्यू वाटरवर्क्स कॉलोनी गया था।"

"कब?"

"कल, छुट्टी होने के बाद।"

"कल शाम मैं घर पर ही थी।"

"उस बड़ी कॉलोनी में कई इमारतें हैं। मैं..."

"दूसरी इमारत के दूसरे गेट से घुसने पर दूसरी मंजिल पर मेरा फ्लैट है। इसे याद रखना बड़ा आसान है। वहां केवल मेरा नाम पूछो तो भी कॉलोनी वाले बता देंगे। सभी मुझे जानते हैं।"

इस बार य्वान श्या का जवाब सकारात्मक और निश्चित था।

"तुम्हारे माता-पिता वाटरवर्क्स के पुराने मजदूर हैं क्या?"

"हां, पिता जी को पुराना मजदूर कहा जा सकता है। मां पहले एक 'छोटे कारोबार' में काम करती थी। बाद में वह भी वाटरवर्क्स में आ गई।"

"छोटे कारोबार" के उल्लेख से खो थिङ को ऐसा लगा जैसे किसी ने उसकी कमजोर नब्ज पर उंगली रख दी। अगर वह "छोटे कारोबार" में नहीं होता तो उसे सहायता मांगने के लिए नहीं आना पड़ता। उसने थोड़ी परेशानी महसूस की, पर झिझकते हुए पूछा, "तो तुम्हारे पिता पुराने मजदूर हैं। उनका पद क्या है? किस चीज के प्रभारी हैं?"

"सब कुछ और कुछ भी नहीं हैं!" य्वान श्या ने शरारत से कहा।

"तुम्हारा मतलब वह मजदूर नहीं, कार्यकर्ता हैं?" खो थिङ ने पूछा।

खो थिङ के इस सवाल से य्वान श्या कुछ नाराज हो गई। उसने गुस्से में पूछा, "मेरे पिता कार्यकर्ता हैं या मजदूर हैं, इससे तुम्हारा क्या मतलब है?"

लड़की ने अचानक यह सवाल पूछ दिया था, खो थिङ ने ईमानदारी के साथ सीधा जवाब दिया, "मेरा अनुमान था कि तुम कार्यकर्ता परिवार की हो और तुम्हारे पिता किसी ऊंचे पद पर हैं। मेरा यह मतलब नहीं था कि पुराना मजदूर..."

यह सुनकर य्वान श्या ने सोचा, "तो तुम भी औरों की तरह ही हो!" उसकी उस युवक में रुचि समाप्त हो गई, उसने अपना सिर झुकाया और अचानक तेज पैडल मारने लगी। कुछ ही क्षणों में वह खो थिङ से आगे निकल गई। जब खो थिङ ने उसके पास आकर कुछ कहना चाहा तो उसने इस तरह से अपना हाथ हिलाया मानो कह रही हो "फिर मिलेंगे" (या कभी नहीं मिलेंगे) और तेजी से साइकिल चलाने लगी।

"मैं अंधी थी..." लड़की ने सोचा। वह उदास और परेशान दिख रही थी। चूंकि वह वसंत में खो थिङ से अचानक मिली थी और ली लू की आलोचना उसने स्वीकार की थी, इसलिए वह युवक उसके दिल में घर बनाने लगा था। काम से घर लौटते समय जब भी वह सहेलियों से अलग होती, वह झील के किनारे उस यादगार स्थान पर जरूर जाती। उसे उम्मीद थी कि वह युवक उसे वहां मिलेगा और वह उसे तुरंत पहचान लेगी। वह धीमी आवाज में तब उससे कहती, "देखो, मेरी आंखें कितनी तेज हैं!" पर वह सपना ही रह गया। पिछली बातों की याद और लगातार मिली निराशा ने उसके प्रथम प्रेम की आग तेज ही की थी। उसे ऐसा लगता था कि दूसरे लोग उसके दिल की गुप्त लालसा के बारे में जानते हैं, पर वह स्वयं को समझा लेती थी कि वह तो केवल आभार व्यक्त करने के लिए मिलना चाहती है। पर आज की अप्रत्याशित मुलाकात ने उसकी खुशी के साथ धोखा किया था, और उस यादगार स्थान पर मंडराने के उसके सारे बहाने बेकार सिद्ध हो गए थे।

य्वान श्या तेजी से साइकिल चलाए जा रही थी। थोड़ी ही देर में वह यादगार स्थान दिखा। उसके दिल में कसक सी उठी, "जब तुम मेरी साइकिल ठीक रहे थे, उस समय तुम कितने सीधे और गंभीर लग रहे थे, पर आज तुम भोंड़े लग रहे हो... क्या मैं सचमुच अंधी थी?"

पीछे-पीछे आ रहा खो थिङ इस बात से परेशान था कि उसकी किस बात से लड़की नाराज हो गई। क्या उसने कोई उल्टी-सीधी बात कह दी? फिर भी ब्वायलर के लिए, और यह भी कहा जा सकता है क्रांति के लिए, प्रेम के लिए नहीं, वह इतनी जल्दी हार मानने वाला नहीं था। उसने भी साइकिल तेज की और पास आता हुआ बोला, "एक मिनट रुकना... मुझे तुमसे एक जरूरी बात करनी है..."

भगवान को खुश करने से आसान लड़की को खुश करना था। उसकी व्याकुल आवाज में प्रकट ईमानदारी या प्रथम मुलाकात से दिल में उत्पन्न मधुर इच्छाओं की याद के कारण, या फिर अपना आभार व्यक्त करने के लिए वह उस यादगार स्थान पर पहुंचने के साथ अपनी साइकिल से उतरी। खो थिङ ने भी अपनी साइकिल रोकी।

लड़की को नाराज हुआ देखकर खो थिङ ने पुरानी बात छोड़ दी और सीधे ब्वायलर के संबंध में बात की।

उसकी बात सुनकर उसके दिल से बोझ उतर गया। उसे हंसी आई कि इस सीधे युवक को यह नहीं मालूम कि वह सहप्रबंधक य्वान की बेटी है। इसलिए उसने प्यार से कहा, "चिंता मत करो! मेरे ऊपर छोड़ दो!"

"तुम्हारे ऊपर छोड़ दूं?... क्या तुम निश्चित हो? मैंने सुना है कि सहप्रबंधक य्वान से मिलना मुश्किल काम है। क्या तुम्हारे पिता उन्हें अच्छी तरह जानते हैं?"

खो थिङ के सवाल से उसे हंसी आई और गुस्सा भी आया, उसने जवाब दिया, "हां, मैंने कहा न, मेरे ऊपर छोड़ दो। और क्या चाहते हो?"

खो थिङ ने आगे कहा, "ठीक है, अगर बात बन जाती है तो मैं कारखाने से परिचय पत्र लिखवाकर ले आऊंगा।"

"ठीक है, ठीक है... और कोई बात करो!" य्वान श्या ने उसकी बात समाप्त कर दी। उसे लगा कि सिर्फ ब्वायलर की बात करना तो इस अच्छे समय को बर्बाद करना है।

४

न्यू वाटरवर्क्स कॉलोनी में घुसते ही खो थिङ ने कोने में पड़ा ब्वायलर देखा। उसने जेब से स्टील टेप निकालकर उसे नापा। य्वान श्या से नहीं रहा गया, उसने कहा, "यदि ब्वायलर ठीक तुम्हारी जरूरत के अनुसार भी हो तो क्या होता है, तुम्हें क्या मालूम कि वे तुम्हें देंगे या नहीं?" खो थिङ ने झेंपकर स्टील टेप जेब में रखा और य्वान श्या के पीछे-पीछे एक इमारत में घुसा।

वे दूसरी इमारत के दूसरे गेट से घुसकर दूसरी मंजिल पर आए। खो थिङ आसपास के माहौल से बेपरवाह था। वह हिसाब लगा रहा था कि इस ब्वायलर से कितनी मात्रा में वाष्प बन सकेगा। य्वान श्या ने धक्का देकर दरवाजा खोला और उसे अंदर बुलाती हुई बोली, "यह सहप्रबंधक य्वान का घर है।" खो थिङ ने इसकी उम्मीद नहीं की थी। वह घबरा गया और उसने चौंककर पूछा, "तुमने तो कहा था कि इस संबंध में पहले अपने पिता से बात करोगी?" य्वान श्या ने किसी अनुभवी अभिनेत्री की तरह संदिग्ध सा जवाब दिया, "एक ही बात है।"

ड्राइंग रूम में तीन-चार व्यक्ति बैठे थे और पूरा कमरा सिगरेट के धुएं से भरा था। य्वान श्या और खो थिङ के आने से सबने बातें बंद कर दीं और उनकी तरफ देखा। य्वान श्या ने हाथ से हवा करते हुए भौंहें चढ़ाकर कहा, "हद है!" वह अपने घर आने वाले अनिमंत्रित मेहमानों को पसंद नहीं करती थी। एक प्रौढ़ उम्र का मेहमान उठा और बोला, "य्वान साहब, मैं आपकी सलाह के अनुसार ही करूंगा। मुझे पूरी उम्मीद है कि समय आने पर आप अवश्य मदद करेंगे।" दूसरे अन्य दो व्यक्ति भी उठे और बोले, "य्वान साहब, आपकी मदद के बिना हमारी समस्या नहीं सुलझेगी। हो सकता है, हम फिर से आकर आपको तकलीफ दें।" इस बीच खो थिङ ने सहप्रबंधक य्वान को अच्छी तरह देख लिया था। वह नाटे व्यक्ति थे, पर उनका गंजा सिर और चमकदार माथा उनकी गरिमा बढ़ाता था।

सभी मेहमानों के जाने के बाद य्वान श्या ने खो थिङ से कहा, "इसे अपना ही घर समझो और आराम से बैठो। मुझे एक जरूरी काम है, मैं जल्दी ही लौट आऊंगी।" यह कहकर वह दरवाजे से बाहर निकली।

य्वान श्या के जाने के बाद खो थिङ को थोड़ी घबराहट हुई। उसे नहीं मालूम था कि लड़की क्या चाल चल रही है? कहीं सहप्रबंधक य्वान के स्वभाव के डर से ही तो वह केवल परिचय कराने के बाद जानबूझकर नहीं निकल गई?

"सहप्रबंधक य्वान... य्वान साहब... माफ करें, आपको तकलीफ... "

"नहीं... नहीं... तकलीफ की क्या बात है? बैठो, बातें करते हैं।"

सहप्रबंधक य्वान ने लंबे युवक का उत्साह से स्वागत-सत्कार किया। उन्होंने मुस्कराते हुए उससे मेज के पास रखी बेंत की कुर्सी पर बैठने को कहा और एक प्याली चाय दी। खो थिङ ने महसूस किया कि सहप्रबंधक य्वान इतने बुरे स्वभाव के नहीं हैं, जितना लोग कहते हैं। सहप्रबंधक य्वान खिड़की के पास की कुर्सी पर आराम से बैठे और उससे बातें करने लगे।

"तुम दोनों एक-दूसरे को बहुत दिनों से जानते हो, ठीक है?"

"नहीं, हम एक-दूसरे को पहले नहीं जानते थे।"

"अच्छा, तुम्हारा परिचय कैसे हुआ?" सहप्रबंधक य्वान ने युवक की लंबाई देखकर माना कि यह लड़का य्वान श्या के योग्य है।

खो थिङ ने शरमाते हुए धीमे स्वर में जवाब दिया, "बस, एक संयोग था।"

सहप्रबंधक य्वान ने इस संबंध में और कोई सवाल नहीं पूछा। उन्होंने मेज पर रखी एक छोटी शीशी उठाई और उसमें से कुछ गोलियां निकालकर पानी के साथ उन्हें निगला। फिर अपने गंजे सिर पर हाथ फेरते हुए उन्होंने कहा, "तुम दोनों पहले नहीं मिले थे, कोई बात नहीं, पर आगे बार-बार मिलोगे और एक-दूसरे को अच्छी तरह समझ लोगे।"

खो थिङ को लगा कि कहीं गलतफहमी हो गई है। उसका चेहरा लाल हो गया और दिल तेजी से धड़कने लगा। उसे याद आया कि रास्ते में जब वह लड़की से ब्वायलर की बात कर रहा था तो वह बार-बार जोर दे रही थी, "मेरे ऊपर छोड़ दो!" और घर में इस तरह घुसी जैसे उसी का घर हो। क्या वह सहप्रबंधक य्वान की बेटी है? हां, दोनों का कुलनाम तो एक ही है। पर उसने जब नाटे सहप्रबंधक को देखा तो उसे संदेह हुआ। फिर भी उसने सोचा, आनुवंशिकी भी कभी-कभी सही नहीं होती और आज तो ऐसा ही लग रहा है। पर उसे इससे क्या? उसे तो ब्वायलर से मतलब है। वह मिल जाए, बस। कितना अच्छा होता यदि य्वान श्या सहप्रबंधक य्वान की बेटी होती!

कुछ सोचकर उसने यह बात सहप्रबंधक य्वान से नहीं पूछी और सीधे अपने काम की बात पर आ गया, "य्वान साहब, बात यह है... हमारे कारखाने को एक ब्वायलर की जरूरत है... हां, वही जो आपकी कॉलोनी में पड़ा है। मैंने उसे नाप लिया है और मार्का भी अच्छा है। वह ठीक हमारी जरूरत के मुताबिक है। यूवान श्या मुझे यहां ले आई, क्या आप अपनी सहमति जाहिर कर हमारी मदद करेंगे?"

बात बिगड़ गई। अब तक सहप्रबंधक य्वान ससुर बनने का सपना देख रहे थे, पर अब वह अचानक प्रबंधक बन गए। उन्हें गुस्सा आया। "फिर वही ब्वायलर!" वह थोड़ी देर तक चुप रहे।

खो थिङ ने आग्रह किया, "हमारे छोटे कारखाने की मदद कीजिए।"

सहप्रबंधक य्वान ने पूछा, "तुम्हारा कारखाना क्या उत्पादित करता है?"

"हमारा प्राथमिक उत्पादन 'चिरनूतन लेप' है।"

"चिरनूतन... लेप? तो तुम यह बनाते हो? क्या यह सचमुच अच्छा है?" सहप्रबंधक ने पूरी रुचि के साथ पूछा। उनकी उंगलियां मेज पर रखी शीशी से खेल रही थीं।

"यह बुरा नहीं है। दूसरे शहरों और सेना से हमें काफी आर्डर मिलते हैं।"

"ओह, यह तो पक्का सबूत है। पर मुझे नहीं लगता कि वह इतना प्रभावशाली है।"

"रासायनिक शोध संस्थान ने इसकी जांच और प्रशंसा की है। दूसरे, हमारे ग्राहक भी संतुष्ट हैं।"

सहप्रबंधक य्वान ने मेज से शीशी उठा ली और उसे देखते हुए पूछा, "यह जीवनवर्द्धिनी गोलियों की तुलना में कैसा है?"

"वह तो बिलकुल अलग चीज है," खो थिङ ने जवाब दिया।

सहप्रबंधक य्वान दिल खोलकर हंसे, अपना सिर पीछे की तरफ झुकाकर उन्होंने अपना भार कुर्सी की पिछली टांगों पर डाला। वह बोले, "मुझे तो सब एक ही से लगते हैं। मैंने य्वान श्या के दवा कारखाने की जीवनवर्द्धिनी गोलियां खाईं, पर देखो और भी गंजा होता जा रहा हूं।" फिर दिखाने की गरज से उन्होंने अपने सिर पर हाथ फेरा। " 'जीवनवर्द्धिनी गोली'; 'चिरनूतन लेप' ये बड़े मोहक नाम हैं। उनके सेवन या प्रयोग से कोई हानि नहीं होती। तुम सहमत हो कि नहीं?"

थोड़ी देर के बाद सहप्रबंधक पहले की अवस्था में आ गए। कुर्सी की टांगें सीधी हो गईं और उनके हाथ भी सिर से नीचे आ गए। उन्होंने स्पष्ट शब्दों में कहा, "अब देखो क्या करना चाहिए। तुम कारखाने लौटकर अपने पार्टी सचिव और कारखाना निदेशक से पूछो कि क्या वे अपने कारखाने का उत्पादन हमें मुहैया करा सकते हैं। मैं अपने कारखाने में दूसरे प्रधानों से ब्वायलर के बारे में बात कर सकता हूं।"

अचानक खो थिङ ने महसूस किया कि सहप्रबंधक य्वान रबड़ की आयु बढ़ाने के काम आने वाले 'चिरनूतन लेप' को जीवनवर्द्धिनी दवा समझकर उससे ऐसी मांग कर रहे हैं। उसकी हंसने की इच्छा हुई, पर साहस नहीं हुआ। उसने सोचा यदि वह सच बता दे तो सहप्रबंधक मूर्ख सिद्ध होंगे। इसलिए उसने होशियारी से काम लिया और एक बहाना गढ़ा, "अभी तक हमने व्यक्तिगत ग्राहकों को नहीं बेचा है, क्योंकि इसकी कीमत बहुत ज्यादा है। दूसरे, यह..."

सहप्रबंधक य्वान उसके गोलमटोल जवाब से चिढ़ गए और त्योरियां चढ़ाकर बोले, "हां, आजकल हम लोग सारे काम नियम के अनुसार करते हैं। अच्छा तुम्हारे कारखाने का क्या नाम है?"

"ऊछाङ नगर क्षेत्र का चिंगारी रासायनिक कारखाना," युवक ने जवाब दिया।

सहप्रबंधक ने अपनी भौंहें सिकोड़ते हुए पूछा, "ऊछाङ नगर क्षेत्र में इस नाम का कोई कारखाना है क्या?"

"दरअसल इसका पूरा नाम सिंह गली का चिंगारी रासायनिक कारखाना है, यह ऊछाङ नगर क्षेत्र में ही है।"

"ओह, एक छोटा कारोबार है?" सहप्रबंधक ने तिरस्कारपूर्ण स्वर में कहा। "अब हमें बिलकुल नियम के अनुसार काम करना चाहिए। मैं ही यहां का अकेला प्रभारी नहीं हूं, इसलिए सिर्फ मेरी सहमति से कुछ नहीं हो सकता... है कि नहीं? और फिर हमें स्वयं उस ब्वायलर की जरूरत है... और कुछ?"

उन्होंने बातचीत खत्म करने के लहजे में अपनी बात कही थी। खो थिङ ने अचानक सिहरन महसूस की, उसका पूरा बदन मलेरियाग्रस्त रोगी की तरह कांपने लगा। उसने स्वयं को अपमानित महसूस किया। उसे यह भी अफसोस हुआ कि उसने व्यर्थ ही कारखाने में धाक जमाने की कोशिश की।

"नौजवान, तुम्हें अनुभव नहीं है। शायद तुम इसके पहले कभी व्यापार की बात करने नहीं गए। अब से कभी भी कहीं बात करने जाओ तो अपने साथ परिचय पत्र लेकर जाओ।" सहप्रबंधक उठकर खड़े हो गए और जबरन मुस्कराने की कोशिश की।

यह गंजा नाटा आदमी! मूर्ख! लालची! दंभी! अज्ञानी! खो थिङ बोलने ही वाला था। वह अपने गुस्से को दबा रहा था... छोटा कारोबार... तो क्या? क्या छोटे करोबारों ने बिना सरकारी मदद के लाखों-करोड़ों रुपए सरकार के लिए नहीं कमाए हैं? सच यह है कि वह भी पहले छोटे कारोबारों को तुच्छ समझता था। काम के बाद उसने विश्वविद्यालय प्रवेश परीक्षा की तैयारी की थी और पार्टी सचिव वान से इजाजत मांगी थी। उसके लिए छोटे कारोबार से निकलने का यह एकमात्र रास्ता था। पार्टी सचिव वान ने तब कहा था, "हमारे पुराने मजदूरों ने तुम्हें पाल-पोसकर बड़ा किया, तुम्हें उड़ना सिखाया। अब तुम्हारे डैने मजबूत हो गए हैं तो तुम उन्हें छोड़कर उड़ जाना चाहते हो। क्या तुम्हें हमें छोड़कर जाते का कोई दुख नहीं है?" उन्होंने उसांस भरी और आगे कहा, "यदि तुम जीर डालोगे तो मैं चाहकर भी तुम्हें नहीं रोक सकूंगी। पूरे देश के हित की उपेक्षा कर केवल अपनी इच्छाओं का ख्याल रखना स्वार्थ है। संक्षेप में, मैं तुम्हारा भविष्य खराब नहीं करूंगी। पर मैं उम्मीद करती हूं कि अपनी जगह किसी और के आ जाने तक तुम इंतजार करोगे।" युवक का दिल पसीज गया, पार्टी सचिव की बातें उसे छू गईं और वह रोया। भावना और व्यक्तिगत भविष्य की दुविधा में भावना की जीत हुई। वह पुराने उस्तादों और पार्टी सचिव का सिर नहीं झुकने देगा। उसे अपने नेताओं से सहानुभूति हुई। पार्टी सचिव वान की उम्र घर पर बैठकर पोते की देखभाल करने की है, पर वह साढ़े चार बजे सुबह उठती हैं और तीन बसें बदलकर शहर के उत्तरी हिस्से से दक्षिणी हिस्से में आती हैं। वह इतनी मेहनत क्यों करती थीं? वैसे पैंसठ वर्षीय कारखाना निदेशक रोजाना लगभग ३० किलोमीटर पुरानी टूटी-फूटी साइकिल से आते-जाते हैं। वह इतनी मेहनत क्यों करते थे? सहप्रबंधक य्वान को देखने के बाद पार्टी सचिव वान

और कारखाना निदेशक के प्रति उसकी श्रद्धा और बढ़ गई। वे उसकी नजर में पहले की अपेक्षा काफी बड़े हो गए। वे कितने अच्छे थे, अपने मजदूरों से कितना मधुर व्यवहार करते थे!

खो थिङ भी खड़ा हो गया, सहप्रबंधक यवान के सामने उसने स्वयं को भी काफी लंबा महसूस किया। इस छोटे कमरे में उसने बहुत सीखा और साथ ही उसे अच्छा सबक मिला था, अपनी ईमानदारी की अधिक इज्जत करने का। वह पूछना चाहता था, "सहप्रबंधक ! क्या ब्वायलर आपकी निजी संपत्ति है या फिर चीन लोक गणराज्य की संपत्ति है?"

खो थिङ ने सहप्रबंधक यवान को घृणा से देखा और एक-एक शब्द पर जोर देते हुए बोला, "आपके सुझाव के लिए धन्यवाद, यवान साहब!" इसके बाद वह कमरे से निकल गया।

वह तेज कदमों से सीढ़ियों से उतरा। वह अपनी साइकिल का ताला खोलने ही वाला था कि किसी ने उसका हाथ पकड़ा। उसने पलटकर देखा, एक औरत टोकरी भर खाने का सामान लिए खड़ी थी।

"अरे, भागे क्यों जा रहे हो?"

खो थिङ की समझ में नहीं आया कि क्या बात है।

"देखो, मैं कुछ खाने का सामान खरीदकर लाई हूं। जब यवान श्या ने बताया कि तुम आए हो तो मैं दौड़ी-दौड़ी बाजार गई। अभी न जाओ, वह जल्दी ही आ जाएगी। उसे काफी समय हो गया है। बस, आ ही रही होगी। तुम थोड़ी देर और रुको, ऊपर चलो न!"

लंबी, स्पष्ट और गर्मदिल औरत की सूरत यवान श्या से मिल रही थी। पर उसका अपमान हुआ था, इसलिए उसने सोचा कि तीनों एक ही जैसे हैं और उसे मूर्ख बना रहे हैं। उसने लापरवाही से कहा, "नहीं, मैं एक जरूरी चीज लेकर नहीं आया हूं।"

उसका आशय न समझकर श्रीमती यवान ने पूछा, "क्या मतलब? तुम्हें क्या लाने की जरूरत है? तुम बगैर कोई झंझट किए आए, यह तो बड़ी खुशी की बात है। तुमने मुंह भी जूठा नहीं किया और चले जा रहे हो। नहीं, यह नहीं होगा। यवान श्या लौटकर मुझे दोष देगी। अगर उस शाम तुमने उसकी साइकिल ठीक नहीं की होती तो क्या हुआ होता, इसकी कल्पना नहीं की जा सकती।"

खो थिङ ने औरत के हाथ से अपना हाथ छुड़ाया और कहा, "अभी मैं नौजवान हूं। मुझे सारे तौर-तरीके नहीं मालूम हैं। मैं अपना परिचय पत्र नहीं ले आया था!" वह साइकिल पर चढ़ा और जाने के लिए बढ़ा।

श्रीमती यवान ने उसे जाते हुए देखा, उन्हें स्वयं नहीं मालूम कि उन्होंने क्या महसूस किया। वह उन्हें सुशील युवक लगा। जरूर यवान श्या के पापा ने किसी बात से उसे नाराज कर दिया होगा। परिचय पत्र! क्या बकवास है? उन्हें मालूम ही नहीं कि वह क्या पूछ बैठे...

५

यवान श्या सचमुच ही किसी काम से चली गई। वह ली लू को फोन किए बिना सीधे

उसके घर गई। ली लू को जब युवक के आगमन का पता चला तो वह झट से तैयार हो गई। वह य्वान श्या के साथ लौटी।

दो "अमरपक्षी" साइकिलें अगल-बगल में चली जा रही थीं, दोनों साइकिलों पर सवार लड़कियां बातें करतीं और हंसती जा रही थीं। साइकिलें इतनी तेज चल रही थीं कि रास्ते के पेड़-पौधे, सड़क की बत्तियां, पैदल चलने वाले सभी पीछे छूटते जा रहे थे। ऐसा लग रहा था कि वे दोनों संसार की सबसे अधिक खुश और लंबी लड़कियां हैं। सुनहरा भविष्य उन्हें संकेत दे रहा था।

हमेशा की तरह ली लू ने घर में घुसने के पहले चेतावनी दी, "चाचा-चाची, मैं फिर से आ गई हूं। क्या मेरा स्वागत है?"

पर कोई उसके स्वागत के लिए नहीं आया, वह स्वयं ही अंदर घुसी। ड्राइंग रूम किसी युद्ध मैदान की तरह लग रहा था। य्वान चाचा किसी घायल बंदी की तरह कुर्सी पर लुढ़के पड़े थे। य्वान चाची उनके सामने विजयी योद्धा की तरह खड़ी थीं।

"वह युवक कहां है? चला गया?"

चाची ने क्रोध में कहा, "इनसे पूछो!"

सहप्रबंधक ने दया की भीख मांगी, "उसने हमारी मदद की, इसलिए अवश्य ही मैं भी उसकी मदद करूंगा! तुम लोग और क्या चाहते हो?"

श्रीमती य्वान ने कमुक के आ जाने से दोहरी ताकत से आक्रमण किया, "मुझे तुम्हारे ब्वायलर की परवाह नहीं, मैं उस युवक को यहां देखना चाहती हूं।"

उनके पति ने कहा, "मैं उसे कहां से ले आऊं? कल तुम उसके छोटे कारोबार फोन करके कह देना कि मैं सहमत हूं।"

"छोटा कारोबार" शब्द सुनकर ली लू का दिल बैठ गया। वह य्वान श्या से अकेले में इस बारे में पूछना चाहती थी। उसने य्वान चाची को शांत कर खाना बनाने के लिए भेजा। य्वान चाची भी इतनी जल्दी शांत नहीं हुईं। उन्होंने ली लू का सहारा लेकर अपने पति को लंबी-चौड़ी सुनाई और उनके स्वभाव की आलोचना की। उन्होंने उस युवक से परिचय पत्र क्यों मांगा? उन्होंने घोषणा की कि वह य्वान साहब के लिए खाना नहीं बनाएंगी। उन्होंने कहा, "इस बूढ़े को भूखा मरने दो।" सहप्रबंधक ने इस नाजुक मौके पर चुप रहना ही उचित समझा और हार मान ली, वर्ना बात और बढ़ जाती और ली लू को बुरा लगता। उन तीनों में वह सबसे नाटे और अभागे थे। पर उनकी पत्नी ने तब तक भाषण देना बंद नहीं किया, जब तक वह स्वयं न थक गईं।

य्वान श्या के कमरे में आकर ली लू ने पूछा, "बताओ, क्या वह छोटे कारोबार में काम करता है?"

य्वान श्या ने उसका प्रश्न टालते हुए कहा, "इससे क्या फर्क पड़ता है? वह छोटे कारोबार में काम करता है, क्या इसलिए हमें उसे तुच्छ समझना चाहिए? दूसरे दर्जे का नागरिक?"

ली लू ने कहा, "नहीं, बिलकुल नहीं। मुझ पर नाराज मत हो। पर मुझे डर है कि चाचा-चाची आपत्ति करें?"

निस्संदेह य्वान श्या ली लू पर अपना गुस्सा नहीं निकाल रही थी। साथ ही वह अपनी सहेली को सब कुछ समझाना भी जरूरी नहीं समझ रही थी। उसने कहा, "हाथ में लौह कटोरा आ जाने के बाद मेरे प्रिय पिता उन दिनों को भूल गए, जब वह टूटी टोकरी लिए खाने की भीख मांगा करते थे। यदि उनके दिल में छोटे कारोबार के प्रति इज्जत होती तो वह मां का स्थानान्तरण राज्य संचालित कारखाने में नहीं करवाते। इसलिए जब मैं किसी के मुंह से नौकरशाही और बड़े अधिकारियों की आलोचना सुनती हूं तो मुझे एक साथ खुशी और दुख का अनुभव होता है। मुझे दुख इस बात का होता है कि मैं ऐसी आलोचना करने में असमर्थ हूं। मुझसे वह हक छीन लिया गया है।"

य्वान श्या ने ली लू के सामने अपनी स्पष्ट राय रखी। उसने बताया कि यदि एक मनुष्य अच्छे चरित्र का है तो हमें उसके पद और प्रतिष्ठा की चिंता नहीं करनी चाहिए। ली लू चिंगारी कारखाने के बारे में विस्तार से जानना चाहती थी। य्वान श्या को जितना मालूम था और खो थिङ ने उसे जो बताया था, उसने सब कुछ ली लू को बताया। उसने कहा कि चिंगारी कारखाने के फेरिक क्लोराइड की मांग बढ़ी है, ऊहान लोहा और इस्पात कंपनी बड़ी मात्रा में उनसे फेरिक क्लोराइड खरीदना चाहती है। पश्चिमी जर्मनी के एक विशेषज्ञ ने उन्हें बताया था कि यदि वे उत्पादन नहीं कर सकते तो उसे पश्चिमी जर्मनी से आयात कर सकते हैं। पर इस छोटे कारोबार ने किसी तरह इसके उत्पादन में सफलता हासिल की है। य्वान श्या का अनुराग देखकर ली लू अधिक देर तक तटस्थ नहीं रह सकी। जल्दी ही दोनों सहमत हो गईं कि वह सही आदमी है। उन्होंने तुरंत आगामी कार्यवाही की एक योजना बनाई।

६

अगले दिन सुबह य्वान श्या और ली लू दोनों चिंगारी रासायनिक कारखाना गईं। कारखाने में ऐसी कोई खासियत नहीं थी। पर इस दृष्टिकोण से देखने पर कि अनेक कठिनाइयों का सामना करते हुए भी कारखाना आगे बढ़ रहा है, कारखाने की महत्ता मालूम हो सकती थी। कारखाने के गेट के बाहर से ली लू ने सब कुछ देख लिया। रात में य्वान श्या की बतायी बात याद आई कि कैसे वे आधुनिक इस्पात कारखाने के लिए फेरिक क्लोराइड बनाने की कोशिश में लगे हैं। उसने कारखाने के अन्य मशहूर उत्पादनों के बारे में भी सोचा। अब कारखाने की हालत अपनी आंखों से देखने के बाद वह प्रशंसा किए बिना नहीं रह सकी, "कौन सोच सकता था कि यह छोटा कारखाना इतना सफल होगा।"

य्वान श्या ने इशारा किया, "वह आ रहा है।"

ली लू ने देखा, वह युवक साइकिल पर चला आ रहा था। वह लंबा और सुंदर था। पहली नजर में उसकी राय अनुकूल बनी, वह किसी भी तरह उसके दोस्त से कम नहीं था। उसने खुशी के साथ दूसरी टिप्पणी की, "कौन सोच सकता था कि यह संभव है!" उसने य्वान श्या की पसंद की सराहना की। उसका गोल चेहरा खुशी से और गोल हो गया।

"साहस, हठ और उत्साह से काम लो," उसने य्वान श्या को दबी आवाज में समझाया।

उसकी तीनों सलाह प्रभावशाली नहीं रहीं। य्वान श्या माफी मांगने आई थी और कुछ दूसरी बात भी सोच रही थी। वह प्रायः आराम से विश्वास के साथ काम लेती थी, पर अब उसके पास आते ही वह क्षुब्ध हो गई।

खो थिङ भी बदला हुआ था। सहप्रबंधक के छोटे ड्राइंग रूम में हुई अग्नि परीक्षा के बाद उसके व्यवहार में ठंडापन आ गया था, उसकी आंखें स्थिर थीं और वह आने वाली हर मुसीबत का मुकाबला करने को तैयार था। य्वान श्या को देखकर उसे आश्चर्य हुआ। वह यहां क्यों आई है और वह भी एक सहेली के साथ? उसने खोजकर तीक्ष्ण शब्द और आक्रामक मुहावरे निकाले ताकि उन्हें ताना मार सके। वह क्या सलाह देने आई है? यदि वह अपने पिता के लिए 'चिरनूतन लेप' खरीदने आई है तो वह उसकी इच्छा पूरी करने में मदद करेगा।...

य्वान श्या ने आगे बढ़कर कहा, "बड़े सबेरे आ गए।"

"तुम... तुम तो मुझसे भी पहले आई हो," खो थिङ ने दो टूक जवाब दिया। उसे झगड़ा करने की आदत नहीं थी। उसके सौंदर्य और लाज का उस पर असर हुआ, वह इतना कठोर हृदय नहीं था कि उसकी अवहेलना करता। सभी तीक्ष्ण और आक्रामक शब्द वह भूल गया।

थोड़ी देर तक खामोशी बनी रही। अंतरराष्ट्रीय वार्ताओं में ऐसी खामोशी बड़ी बात नहीं है, कभी-कभी वर्षों कोई बातचीत नहीं होती। पर ऐसे मौके पर थोड़ी देर की खामोशी भी तनाव बढ़ा देती है। खामोशी युद्ध से अधिक असहनीय हो गई।

पार्टी सचिव वान आधा भठूरा हाथ में लिए आ रही थीं। उन्होंने दूर से ही पूछा, "खो थिङ, क्या ब्वायलर मिला?"

"वे परिचय पत्र चाहते हैं!" खो थिङ ने जवाब दिया। उसने य्वान श्या पर व्यंग्य करते हुए यह बात कही।

"अगर तुमने सारी व्यवस्था कर ली है तो परिचय पत्र लिखने में मुझे कितना समय लगेगा।" परिस्थिति से अपरिचित पार्टी सचिव वान बहुत खुश दिखीं। पास आने पर उन्होंने प्रशंसा के स्वर में पूछा, "ये दोनों लड़कियां कौन हैं?"

ली लू ने तुरंत स्थिति संभालते हुए कहा, "सहप्रबंधक य्वान ने हमें यहां भेजा है। कल कॉमरेड खो के लौटने के बाद सहप्रबंधक य्वान ने कहा, 'उसे बार-बार यहां आने-जाने की क्या जरूरत है। हम सभी चार आधुनिकीकरण को सफल बनाने में व्यस्त हैं।' इसलिए उन्होंने स्वयं यह आदेश लिखकर हमें यहां पहुंचाने के लिए दिया।"

य्वान श्या ने अपने पिता की गलती को ढंकने के लिए ली लू की कोशिश की प्रशंसा की। उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि क्या कहे। सच यह था कि ब्वायलर की समस्या तुरंत नहीं सुलझाई गई तो संभव था कि किसी दूसरे कारखाने को बेच दिया जाता। ली लू य्वान श्या के दोस्त को देखना भी चाहती थी ताकि वह दोस्त के निजी सलाहकार की भूमिका अच्छी तरह अदा कर सके। इसलिए दोनों ने सहप्रबंधक य्वान को आदेश लिखने पर बाध्य किया था।

पार्टी सचिव वान कृतज्ञ थीं। वह दोनों लड़कियों को अपने दफ्तर में बुलाकर बात करना

चाहती थीं, पर उन्हें डर था कि उनके तेल लगे हाथ से लड़कियों के कपड़े गंदे हो जाएंगे। ली लू ने कहा कोई बात नहीं है और वह पार्टी सचिव वान के साथ दफ्तर में आई। ली लू ने पार्टी सचिव वान को कल की घटना उचित रूप से बताई और साथ ही खो थिङ के बारे में विशेष जानकारी भी हासिल कर ली। पार्टी सचिव वान अत्यंत खुश थीं, उन्होंने मुस्करा कर बाहर खड़ी य्वान श्या को बार-बार देखा। उनके कारखाने की कुछ लड़कियों ने तृतीय दवा कारखाने के मजदूरों से शादियां की थीं। अब तृतीय दवा कारखाने की इतनी सुंदर लड़की, और वह भी सहप्रबंधक य्वान की बेटी, उनके छोटे कारोबार में स्वयं आई थी। इससे उनकी प्रतिष्ठा में इजाफा हुआ था। उन्होंने सहप्रबंधक य्वान के प्रति आभार व्यक्त किया; उन्होंने केवल ब्वायलर देकर ही मदद नहीं की थी, बल्कि दहेज में एक सुंदर लड़की भी दी थी। "हमारे छोटे कारोबार को तुच्छ न समझें, यहां तक कि सहप्रबंधक य्वान भी इसके बारे में अच्छी राय रखते हैं।" उन्होंने संतोष की सांस ली।

य्वान श्या ने खो थिङ से माफी मांगी। पर खो थिङ अभी भी नाराज था। उसने कोई बात नहीं की। तभी पाली आरंभ होने की घंटी बजी और खो थिङ अपने काम पर चला गया। य्वान श्या नहीं जान पाई कि उसने उसे माफ किया या नहीं।

उस शाम दक्षिण झील के किनारे पर य्वान श्या प्रतीक्षा कर रही थी। वह उसी स्थान पर खड़ी थी, जहां उसकी साइकिल खराब हुई थी और उसे खो थिङ ने ठीक किया था। अनेक लोग वहां से गुजरे। उदास य्वान श्या सोच रही थी, "क्या आज भी मनमोहक चांद निकलेगा? क्या खो थिङ अपने वादे के अनुसार यहां आएगा? या वह लंबा रास्ता लेकर दूसरी तरफ से घर लौट जाएगा? उसे उसके पिता और उसके बीच का फर्क देखना चाहिए...।"